सामान्य अर्थशास्त्र

व्यष्टिगत आर्थिक विश्लेषण

डॉ. देवा राम

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग
मानव संसाधन विकास मंत्रालय
(माध्यमिक शिक्षा और उच्चतर शिक्षा विभाग)
भारत सरकार

॥ राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी ॥

Scanned with CamScanner

प्रस्तुत पुस्तक "सामान्य अर्थशास्त्र-व्यष्टिगत आर्थिक विश्लेषण" पाँच इकाइयों तथा सत्रह अध्यायों में विभक्त है जो कि सरल व सुगम्य भाषा में लिखी गई है। प्रथम इकाई अर्थशास्त्र तथा व्यष्टि अर्थशास्त्र का परिचय प्रस्तुत कर रही है तो द्वितीय इकाई उपभोक्ता के व्यवहार से सम्बन्धित विषयवस्तु उपयोगिता एवं माँग के नियम इत्यादि मामलों को चित्रों की सहायता से सुपाठ्य भाषा में व्याख्या करती है। इकाई तृतीय उत्पादक के व्यवहार अर्थात् उत्पादन व लागत सिद्धान्तों को उचित उदाहरणों व रेखा चित्रों से वर्णन करती है वहीं इकाई चतुर्थ बाजार के विभिन्न रूपों को विस्तृत रूप से समझाने का प्रयास करती है। इकाई पंचम में वितरण के समस्त नियमों/सिद्धान्तों की व्याख्या की गई है जिसमें लाभ, ब्याज, लगान, मजदूरी को सरलता से समझाते हुए इनके वितरण सम्बन्धी सिद्धान्तों की व्याख्या की गई।

यह पुस्तक अर्थशास्त्र विषय का प्रारम्भिक ज्ञान प्राप्त करने वाले पाठकों, विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में अध्ययनरत अर्थशास्त्र के विद्यार्थियों एवं प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करने वाले विद्यार्थियों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

सामान्य अर्थशास्त्र

व्यष्टिगत आर्थिक विश्लेषण

(बी.ए. प्रथम वर्ष एवं प्रतियोगी परीक्षाओं के विद्यार्थियों के लिए)

लेखक

डॉ. देवा राम

सह आचार्य-अर्थशास्त्र

डॉ. भीमराव अम्बेडकर राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,

निम्बाहेड़ा (राज.)

।। राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी ।।

जयपुर

Scanned with CamScanner

मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार की विश्वविद्यालय-स्तरीय ग्रन्थ-निर्माण योजना के अन्तर्गत, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर द्वारा प्रकाशित।

प्रथम संस्करण : 2019
(प्रतियाँ 1100)

सामान्य अर्थशास्त्र : व्यष्टिगत आर्थिक विश्लेषण
ISBN 978-93-88776-10-3

मूल्य : 200.00 रुपये मात्र

© सर्वाधिकार प्रकाशक के अधीन

प्रकाशक :
राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी
प्लाट नं. 1, झालाना सांस्थानिक क्षेत्र
जयपुर- 302 004
दूरभाष : 0141-2711129, 2710341
Web-Site : w.w.w. rajhga.com.

लेजर कम्पोजिंग :
अंकित प्रिन्टर्स, जयपुर
फोन : 9784924040

Scanned with CamScanner

विषय-सूची

इकाई–I : अर्थशास्त्र का परिचय

अध्याय : 1. अर्थशास्त्र का अर्थ, परिभाषाएँ, विषय क्षेत्र एवं प्रकृति 1–19

अर्थशास्त्र का इतिहास, अर्थशास्त्र का अर्थ एवं परिभाषाएँ, अर्थशास्त्र का क्षेत्र, विषयवस्तु एवं प्रकृति, अर्थशास्त्र–विज्ञान के रूप में, अर्थशास्त्र–कला के रूप में, अर्थशास्त्र–सकारात्मक (यथार्थ) अथवा आदर्शात्मक अध्ययन

अध्याय : 2. अर्थशास्त्र की अध्ययन पद्धतियाँ एवं साम्य 20–32

अध्ययन पद्धतियाँ (Methodology), निगमन तथा आगमन कार्य विधि (पद्धतियाँ), स्थैतिक एवं प्रावैगिक विश्लेषण पद्धतियाँ

अध्याय : 3. अर्थशास्त्र की केन्द्रीय समस्याएँ एवं उत्पादन संभावना वक्र 33–39

मूल आर्थिक समस्याएँ / अर्थशास्त्र की केन्द्रीय समस्याएँ, उत्पादन सम्भावना वक्र।

इकाई–II : उपभोक्ता का व्यवहार

अध्याय : 4. उपयोगिता विश्लेषण 40–60

गणनावाचक उपयोगिता दृष्टिकोण या उपागम, सीमांत उपयोगिता ह्रास नियम, उपभोक्ता का सन्तुलन, क्रमवाचक उपयोगिता उपागम या दृष्टिकोण (विश्लेषण), उदासीनता वक्र व उदासीनता वक्रों की सहायता से उपभोक्ता का संतुलन।

अध्याय : 5. माँग का सिद्धान्त (Theory of Demand) 61–79

माँग का अर्थ, माँग वक्र, माँग को प्रभावित करने वाले तत्व, माँग का नियम व प्रभाव (कीमत प्रभाव, आय प्रभाव, प्रतिस्थापन प्रभाव), आय–उपभोग व एंजिल वक्र।

अध्याय : 6. माँग की लोच (Elasticity of Demand) 80–99

माँग की लोच की अवधारणा, माँग की कीमत लोच, माँग की लोच की कोटियां, माँग की लोच का मापन, माँग की आय लोच, माँग की आड़ी लोच, पूर्ति लोच, उपभोक्ता की बचत।

Scanned with CamScanner

इकाई–III : उत्पादक का व्यवहार – उत्पादन सिद्धांत व लागत सिद्धांत

अध्याय : 7. **उत्पादन तथा उत्पादन फलन (Production & Production Function)** 100–138

उत्पादन तथा उत्पादन फलन, अल्पकालीन उत्पादन फलन – विविध अनुपातों के नियम, दीर्घकालीन उत्पादन फलन – समोत्पत्ति वक्र, पैमाने के प्रतिफल, उत्पादन की तीन अवस्थाएँ, साधन प्रतिस्थापन व इसकी दर, समलागत रेखा व साधनों का अनुकूलतम संयोग या न्यूनतम लागत संयोग, विस्तार पथ

अध्याय : 8. **लागत अवधारणा/लागत सिद्धांत (Concept of Costs)** 139–153

उत्पादन लागत, अल्पकालीन लागतें व लागत वक्र, लागतों में अन्तर्सम्बन्ध, दीर्घकालीन लागतें

अध्याय : 9. **आगम अवधारणा एवं आगम वक्र (Concept of Revenue and Revenue Curves)** 154–163

कुल आगम, औसत आगम व सीमांत आगम, औसत आगम, सीमांत आगम तथा लोच में संबंध।

इकाई–IV : बाजार एवं बाजारों के प्रकार

अध्याय : 10. **बाजार के स्वरूप एवं पूर्ण प्रतियोगिता** 164–177

बाजारों के विभिन्न रूप/वर्गीकरण, पूर्ण प्रतियोगिता बाजार व पूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत उद्योग व फर्म का सन्तुलन, अल्पकालीन एवं दीर्घकालीन सन्तुलन, ब्रेक–इवन अथवा शट–डाउन पॉइन्ट (उत्पादन बन्द करो का बिन्दु)

अध्याय : 11. **एकाधिकार (Monopoly)** 178–191

एकाधिकार का अर्थ एवं परिभाषा, अल्पकाल एवम् दीर्घकाल में एकाधिकारी फर्म का संतुलन, कीमत व उत्पादन का निर्धारण, कीमत विभेद की दशा में एकाधिकारी का संतुलन, एकाधिकारी शक्ति का मापन, करारोपण एवं सन्तुलन

अध्याय: 12. **अपूर्ण प्रतियोगिता–एकाधिकारात्मक प्रतियोगिता, अल्पाधिकार व अन्य बाजार** 192–206

अपूर्ण प्रतियोगिता – द्वैयाधिकार, अल्पाधिकार, एकाधिकारात्मक प्रतियोगिता, एकाधिकारात्मक प्रतियोगिता में फर्म का संतुलन तथा कीमत व उत्पादन निर्धारण।

इकाई–V : वितरण के सिद्धांत

अध्याय : 13. **वितरण का सिद्धांत–सीमांत उत्पादकता सिद्धांत** 207–220

वितरण के सीमांत उत्पादकता सिद्धांत की व्याख्या, मान्यताएँ, आलोचनाएँ

अध्याय : 14. **मजदूरी निर्धारण के सिद्धांत** 221–234

मजदूरी की अवधारणा, मजदूरी निर्धारण के सिद्धांत – मजदूरी का आधुनिक अथवा माँग एवं पूर्ति का सिद्धांत, सामूहिक सौदेबाजी व मजदूरी निर्धारण

अध्याय : 15. **लगान (Rent)** 235–244

लगान की अवधारणा व लगान के सिद्धान्त, रिकार्डो का लगान सिद्धांत – अन्तरीय या भेदात्मक लगान, दुर्लभ लगान, आभास (अर्द्ध) लगान (Quasi Rent)

अध्याय : 16. **लाभ एवं लाभ के सिद्धांत (Profit and Theories of Profit)** 245–253

लाभ की अवधारणा व सिद्धांत, लाभ का नवप्रवर्त्तनों का सिद्धांत या शुम्पीटर का लाभ का नवप्रवर्तन सिद्धांत, हॉले का जोखिम सहन लाभ का सिद्धांत, नाइट का अनिश्चितता वहन का लाभ सिद्धांत

अध्याय : 17. **ब्याज के सिद्धांत (Theories of Interest)** 254–270

ब्याज का अर्थ व परिभाषा, ब्याज के सिद्धांत–ब्याज का प्रतिष्ठित सिद्धान्त, कीन्स का ब्याज का तरलता पसन्दगी सिद्धांत, ब्याज का आधुनिक सिद्धांत: हिक्स व हेन्सन का IS–LM वक्र मॉडल, IS व LM वक्रों द्वारा ब्याज दर का निर्धारण, आधुनिक सिद्धान्त की समीक्षा।

Scanned with CamScanner

डॉ. देवा राम

सह आचार्य-अर्थशास्त्र

डॉ. भीमराव अम्बेडकर राजकीय स्नातकोत्तर

महाविद्यालय, निम्बाहेड़ा (राज.)

शिक्षा—एम. ए.-अर्थशास्त्र 1998 में, पी.एच.डी.-अर्थशास्त्र 2002 में, अर्थशास्त्र विभाग, जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर से की एवं विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की परीक्षा नेट व जेआरएफ जून 1998 में उत्तीर्ण की।

अध्यापक अनुभव—16 वर्षों से उच्च शिक्षा के क्षेत्र में राजस्थान महाविद्यालय शिक्षा के अन्तर्गत डॉ. भीमराव अम्बेडकर राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, निम्बाहेड़ा (राज.) में अध्यापन का कार्य कर रहे हैं।

शोध/प्रकाशन/शोध परियोजना—2 पुस्तक एवं 16 शोध पत्र प्रकाशित, 25 से अधिक सेमिनार/सम्मेलनों में भाग लिया एवं पत्रवाचन किया। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से स्वीकृत 02 लघु शोध परियोजना पूर्ण की।

सदस्यता—भारतीय आर्थिक परिषद (आई. ई. ए.) राजस्थान आर्थिक परिषद (आर. ई. ए.) भारतीय आर्थमितिक समाज (टी आई ई एस-द इण्डियन इकनोमैट्रिक सोसायटी) की लाइफटाइम सदस्यता।

पता—169 विश्वकर्मा भवन, आदर्श कॉलोनी, निम्बाहेड़ा जिला-चित्तौड़गढ़ (राज.), Email : dev.bhadrar@gmail.com

Scanned with CamScanner

अकादमी द्वारा प्रकाशित वाणिज्य एवं अर्थशास्त्र विषयक पुस्तकें

1. विज्ञापन तकनीक एवं सिद्धान्त (सातवां सं.) नरेन्द्र सिंह यादव 305.00
   ISBN 978-93-5131-280-2
2. संगठनात्मक व्यवहार (आठवां सं.) ..... डॉ. पी.सी. जैन 395.00
   ISBN 978-93-5131-271-0
3. विपणन अनुसंधान (छ.सं.) ..... डॉ. बी.के. श्रीवास्तव 255.00
   ISBN 978-81-7137-683-4
4. विक्रय प्रबन्ध ..... डॉ. एस.पी.माथुर 225.00
   ISBN 978-81-7137-703-9
5. प्रबन्ध ..... डॉ. एस.पी.माथुर 235.00
   ISBN 978-81-7137-746-6
6. विज्ञापन प्रबन्ध (द्वि.सं.) ..... नरेन्द्र सिंह यादव 90.00
   ISBN 978-81-7137-973-6
7. वित्तीय प्रबन्ध ..... प्रो. रेनु जटाना 255.00
   ISBN 978-93-5131-160-7 ..... डॉ. सागर सांवरिया
8. व्यावसायिक अर्थशास्त्र ..... डॉ. मुकेश माथुर,
   ISBN 978-93-5131-222-2 ..... डॉ. ऋचा गुप्ता 245.00
9. सामान्य अर्थशास्त्र ..... डॉ. देवा राम 200.00
   ISBN 978-93-88776-10-3

ISBN 978-93-88776-10-3
9 789388 776103

मूल्य : 200.00 रुपये मात्र
Website : www.rajhga.com

Scanned with CamScanner

सामान्य अर्थशास्त्र

व्यष्टिगत आर्थिक विश्लेषण

डॉ. देवा राम

मानव संसाधन विकास मंत्रालय

॥ राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी ॥

Scanned with CamScanner

मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार की विश्वविद्यालय–स्तरीय ग्रन्थ–निर्माण योजना के अन्तर्गत, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर द्वारा प्रकाशित

द्वितीय संस्करण : 2020

(प्रतियाँ 1100)

सामान्य अर्थशास्त्र : व्यष्टिगत आर्थिक विश्लेषण

ISBN 978-93-89260-90-8

मूल्य : 200.00 रुपये मात्र

©सर्वाधिकार प्रकाशक के अधीन

प्रकाशक :

राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी

प्लाट नं. 1, झालाना सांस्थानिक क्षेत्र

जयपुर– 302 004

दूरभाष : 2711129, 2710341

Website : www.rajhga.com.

मुद्रक :

मै. हरिहर प्रिंटर्स

जयपुर

Scanned with CamScanner

राजस्थान की अर्थव्यवस्था

डॉ. देवा राम
सह आचार्य

Scanned with CamScanner

राजस्थान की अर्थव्यवस्था
(Economy of Rajasthan)

[राजस्थान के विश्वविद्यालयों में संचालित 'राजस्थान की अर्थव्यवस्था' के पाठ्यक्रम पर आधारित एवं विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए उपयोगी पुस्तक]

लेखक

डॉ. देवा राम

सह-आचार्य (अर्थशास्त्र)

डॉ. भीमराव अम्बेडकर राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,

निम्बाहेड़ा (राज.)

चाणक्य प्रकाशन

जयपुर

Scanned with CamScanner

प्रकाशक :
चाणक्य प्रकाशन
Shop No. 9 सिद्धि विनायक प्लाजा
मेन टोंक फाटक, जयपुर, राज. 302015
मो. न. - 9413240489

मुख्य वितरक :
Hardiya Publisher & Distributors
गली नम्बर 23, आदर्श बाजार टोंक फाटक
जयपुर, राज. 302015
मो. न. - 7737200135, 9079692820

© लेखक

ISBN : 978-93-94940-13-0

प्रथम संस्करण- 2023

मूल्य : ₹ 259/-
दो सौ उनसठ रु. मात्र

लेजर टाईप सैटिंग-
चाणक्य प्रकाशन यूनिट, जयपुर

मुद्रक-
अभिषेक प्रिन्टर्स, जयपुर

[illegible]

[illegible]

प्रस्तावना

अर्थशास्त्र के पाठकों के लिए आर्थिक सिद्धान्तों को समझना जितना महत्वपूर्ण होता है उतना ही महत्वपूर्ण अपने आस-पास के आर्थिक पर्यावरण को जानना भी होता है। राजस्थान के आर्थिक पर्यावरण की सम्पूर्ण जानकारी के साथ इस पुस्तक का उद्देश्य भी यही है। यह पुस्तक राज्य के विश्वविद्यालयों में संचालित विविध पाठ्यक्रमों में 'राजस्थान की अर्थव्यवस्था' के सम्पूर्ण कोर्स पर आधारित है जिसमें नवीनतम जानकारी को भी अद्यतन किया गया है और विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं के पाठ्यक्रम को भी ध्यान में रखकर विषय-सामग्री तैयार की गई है।

पुस्तक में राज्य की अर्थव्यवस्था के सभी पहलुओं यथा-आर्थिक परिदृश्य, प्राकृतिक संसाधन, मानवीय संसाधन, राज्य घरेलू आय, कृषि परिदृश्य, औद्योगिक विकास, पशुपालन व डेयरी विकास, आधारभूत संरचना, बहुउद्देशीय परियोजनाओं, बुनियादी सामाजिक सेवाओं, पर्यटन विकास, आर्थिक नियोजन, राज्य की मुख्य व विशेष समस्याओं (निर्धनता, बेकारी, अकाल-सूखा) तथा उनके निवारण के उपायों और प्रयासों, विशेष कार्यक्रमों एवं राज्य बजट की प्रवृत्तियों को सम्मिलित किया गया है। मैंने इस पुस्तक में राजस्थान के आर्थिक पर्यावरण के विभिन्न पहलुओं को क्रमवार व व्यवस्थित ढंग से सरल व सुगम तरीके से समझाने का प्रयास किया है।

मुझे आशा है कि यह पुस्तक स्नातक व स्नातकोत्तर कक्षाओं के विद्यार्थियों एवं राजस्थान प्रशासनिक सेवाओं तथा अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे प्रतिभागियों के लिए बेहद उपयोगी सिद्ध होगी। पुस्तक में सुधार के लिए सुझावों का मैं स्वागत करता हूँ।

पुस्तक लेखन में प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग करने वाले सभी शुभचिन्तकों का मैं आभार व्यक्त करता हूँ साथ ही पुस्तक के प्रकाशन में सहयोग के लिए चाणक्य प्रकाशन एवं टीम का विशेष आभार प्रकट करता हूँ।

—डॉ. देवा राम

Scanned with CamScanner

अनुक्रमणिका

क्र.सं.		पृष्ठ सं.
अध्याय 1	राजस्थान : एक परिचय	1
अध्याय 2	राजस्थान की अर्थव्यवस्था का वृहद परिदृश्य एवं भारतीय अर्थव्यवस्था में स्थान पृष्ठभूमि, भारतीय, अर्थव्यवस्था में स्थान– जनसांख्यिकी, क्षेत्र, कृषि, आधारभूत संरचना, उद्योग व वित्त तथा अन्य घटकों के आधार पर।	3
अध्याय 3	राजस्थान में प्राकृतिक संसाधन: भूमि, वन, जल, खनिज सम्पदा राज्य में भूमि व भू–उपयोग, मिट्टियां, जलवायु, राज्य में वन क्षेत्र व महत्व, राज्य में जल संसाधन–सतही जल व भूमिगत जल, राज्य में खनिज संसाधन–भण्डार क्षेत्र व अर्थव्यवस्था में योगदान।	14
अध्याय 4	राजस्थान की जनसांख्यिकी की विस्तृत विशेषताएँ राज्य की जनसंख्या का आकार, वृद्धि दर, घनत्व, लिंगानुपात, क्षेत्रीय एवं व्यावसायिक वितरण, राज्य में साक्षरता व मानव संसाधन विकास सूचक, जनसंख्या वृद्धि के कारण व नियंत्रण के उपाय।	32
अध्याय 5	राज्य घरेलू उत्पाद एवं इसकी प्रवृत्तियाँ राज्य घरेलू उत्पाद के विभिन्न घटक, अखिल भारतीय स्तर पर तुलना एवं राज्य घरेलू आय का क्षेत्रवार संयोजन व वितरण की प्रवृत्तियाँ	49
अध्याय 6	राजस्थान में कृषि परिदृश्य, कृषिगत विकास, विपणन, वित्त एवं भू-सुधार राज्य में कृषि हेतु भू–उपयोग व कार्यशील जोतें, फसल प्रारूप व प्रमुख फसलें, कृषिगत उत्पादन व उत्पादकता, कृषिगत विकास–समस्याएँ व समाधान, कृषिगत विपणन, वित्त व फसल बीमा, राजस्थान में भूमि सुधार।	61
अध्याय 7	राजस्थान में पशुधन: पशुपालन और डेयरी विकास राज्य में पशुधन सम्पदा का महत्व, पशुधन संख्या व नस्लें, पशुपालन की समस्याएँ एवं पशुपालन प्रोन्नति के लिए सरकारी प्रयास। राजस्थान में डेयरी विकास।	81

Scanned with CamScanner

अध्याय 8 **राजस्थान में आधारभूत संरचना (अवसंरचना) : ऊर्जा तथा परिवहन** 92

राजस्थान में ऊर्जा के स्रोत तथा विद्युत प्रस्थापन क्षमता–तापीय, आण्विक, जलीय, पवन, सौर व बायोमास ऊर्जा संसाधन। राज्य में परिवहन ढाँचा–सड़क परिवहन सुविधाएँ व समस्याएँ, रेल तथा वायु परिवहन सेवाएँ।

अध्याय 9 **राजस्थान में बहुद्देशीय नदी घाटी एवं सिंचाई परियोजनाएँ** 107

राज्य में बहुउद्देशीय परियोजनाएँ (भाखड़ा–नांगल, व्यास, चम्बल, माही–बजाज परियोजनाएँ), अन्य सिंचाई परियोजनाएँ (वृहद्–इंदिरा गांधी नहर, गंग नहर, राजीव गांधी सिद्धमुख नहर, नर्मदा नहर, बीसलपुर, जाखम, परवन, जवाई, यमुना जल, मेजा बांध व गुड़ी नहर, मध्यम–मनोहर थाना, गागरिन, पीपलाद, गरडदा, तकली एवं अन्य मध्यम व लघु सिंचाई परियोजनाएँ)।

अध्याय 10 **राजस्थान में उद्योग एवं औद्योगिक विकास** 118

राज्य में उद्योग व उनका वर्गीकरण–कच्चे माल की उपलब्धता आधारित उद्योग, निवेश आधारित उद्योग, निर्यात् आधारित उद्योग (कृषि व सम्बद्ध क्षेत्र आधारित–सूती वस्त्र, चीनी, घी–तेल, दुग्ध उत्पाद उद्योग, खनिज आधारित–सीमेंट, कांच, अभ्रक, पत्थर–नगीना–मेटल–तरल आधारित उद्योग, रसायन आधारित–नमक, उर्वरकउद्योग एवं अन्य इंजीनियरिंग–इलेक्ट्रिकल–इलेक्ट्रॉनिक्स आदि उद्योग)। राज्य में छोटे व मध्यम पैमाने के उद्योग।

अध्याय 11 **राजस्थान में औद्योगिक विकास एवं वित्त के निगम व उद्यमिता विकास** 133

राजस्थान राज्य औद्योगिक विकास व निवेशन निगम लिमिटेड (रीको), विशेष आर्थिक क्षेत्र (सेज), राजस्थान वित्त निगम (आरएफसी), राजस्थान लघु उद्योग निगम लिमिटेड (राजसीको), ग्रामीण गैर–कृषि विकास एजेन्सी (रूडा), राज्य में उद्यमिता विकास तथा प्रोत्साहन विकास क्षेत्र।

अध्याय 12 **राज्य में बुनियादी सामाजिक सेवाएँ (सर्विस सेक्टर) : शिक्षा एवं स्वास्थ्य** 145

राज्य में शिक्षा सुविधाएँ, शैक्षिक स्तर व चुनौतियाँ (स्कूली, उच्च व तकनीकी शिक्षा तथा प्रशिक्षण संस्थान), राज्य में चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सुविधाएं, स्वास्थ्य संकेतक व सरकारी योजनाएँ।

अध्याय 13 **राजस्थान में पर्यटन विकास** 153

राज्य में प्रमुख पर्यटन स्थल/क्षेत्र/मेले/उत्सव/सांस्कृतिक कार्यक्रम, पर्यटन का राज्य की अर्थव्यवस्था में महत्व, पर्यटन विकास के प्रयास व उपलब्धियाँ। राजस्थान पर्यटन विकास निगम लिमिटेड (आरटीडीसी) पर्यटन की सम्भावनाएं व चुनौतियाँ।

अध्याय 14 **राजस्थान में निर्धनता की समस्या एवं निवारण के उपाय** 167

निर्धनता की अवधारणा, राज्य में निर्धनता के आँकड़े व कारण, राज्य में गरीबी उन्मूलन के प्रयास व निर्धनता निवारण तथा रोजगार सृजन के कार्यक्रम (IRDP, TRYSEM, DWACARA, SITRA, MWS, GKY, SGSY, NREP, RLEGP, JRY (JGSY), NRY, SGRY, DPIP, MPOWER, MNREGA)

अध्याय 15 **राजस्थान में बेरोजगारी की समस्या** 181

राज्य में बेरोजगारी के प्रकार, आँकड़े तथा कारण, बेरोजगारी दूर करने के उपाय व व्यास समिति के सुझाव।

अध्याय 16 **राजस्थान में अकाल व सूखा (राज्य की विशेष समस्याएँ - अकाल व सूखा)** 187

राज्य में अकाल व सूखे की व्यापकता व कारण, राज्य में अकाल व सूखे के प्रतिकूल प्रभाव को कम करने के अल्पकालीन व दीर्घकालीन उपाय एवं नीतियाँ।

अध्याय 17 **राजस्थान में विशिष्ट क्षेत्रीय विकास कार्यक्रम** 194

क्षेत्रीय विकास कार्यक्रम–सूखा सम्भावित क्षेत्र कार्यक्रम (DPAP), मरु विकास कार्यक्रम (DDP), अरावली विकास कार्यक्रम (ADP), अन्य मेवात–डांग–कन्दरा–सीमावर्ती क्षेत्र विकास कार्यक्रम, जनजाति विकास कार्यक्रम–जनजाति क्षेत्र विकास कार्यक्रम (TADP), व जनजाति उपयोजना (TSP), माडा, सहरिया जनजाति व बिखरी जनजाति विकास कार्यक्रम आदि।

Scanned with CamScanner

अध्याय 18 राजस्थान का बजट एवं राज्य की बजट प्रवृत्तियाँ 202

राज्य के बजट 2022–23 व 2021–22 के राजकोषीय संकेतक, राज्य बजट की प्रवृत्तियाँ

अध्याय 19 राजस्थान में आर्थिक नियोजन एवं आर्थिक विकास की बाधाएँ 206

राज्य में आर्थिक नियोजन के दौरान योजनाबद्ध व मदवार व्यय आवंटन के साथ उद्देश्यों तथा उपलब्धियों की चर्चा। राज्य के आर्थिक विकास की बाधाएँ व विकास हेतु सुझाव।

□□□

अध्याय 1

राजस्थान : एक परिचय

राजस्थान वर्तमान में भारत के 29 राज्यों और 8 केन्द्र शासित प्रदेशों में क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बड़ा राज्य है। राज्य का कुल क्षेत्रफल 3.42 लाख वर्ग किलोमीटर (3,42,239.74 किमी²) है जो कि भारत के कुल भू–भाग का 10.41 प्रतिशत हिस्सा है।

राजस्थान का यह वर्तमान स्वरूप नवम्बर 1956 में अस्तित्व में आया। स्वतंत्रता प्राप्ति के समय अजमेर–मेरवाड़ा प्रदेश ब्रिटिश शासन के अन्तर्गत सीधा जुड़ा हुआ था जबकि राजस्थान का अन्य इलाका अलग–अलग 19 देशी रियासतों और 3 ठिकानों में विभक्त था। आजादी के बाद अजमेर–मेरवाड़ा तो ब्रिटिश शासन का अंग होने से भारत का हिस्सा बन गया लेकिन रियासतों और ठिकानों को एकीकृत करने के लिए 8 वर्ष से भी अधिक का लम्बा समय लगा। राजस्थान के एकीकरण का पहला चरण मार्च 1948 में आरम्भ हुआ जो सातवें चरण के साथ नवम्बर 1956 में समाप्त हुआ, यह समयावधि 8 वर्ष व साढ़े सात महीने की रही।

राजस्थान भारत के उत्तर–पश्चिम भाग में 23° 30′ से 30° 12′ उत्तरी अक्षांश और 69° 30′ से 78° 17′ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है जिसका आकार लगभग एक पतंग जैसा है। उत्तर से दक्षिण राज्य की लम्बाई 826 किमी. है तो पूर्व से पश्चिम की चौड़ाई 869 किमी. है। 1070 किमी की लम्बी पश्चिमी सीमा अंतर्राष्ट्रीय सीमा पाकिस्तान से लगी है जबकि उत्तर से पूर्व होते हुए दक्षिण तक घरेलू सीमा जो 5860 किमी. है क्रमशः पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, और गुजरात से लगी हुई है।

थार मरुस्थल (ग्रेट इण्डियन डेजर्ट) का 85 प्रतिशत भाग भारत में विस्तारित है जिसमें से कुल का 61.11 प्रतिशत भाग अकेले राजस्थान में है जो मुख्यतः 12 जिलों यथा जैसलमेर, बीकानेर, हनुमानगढ़, श्रीगंगानगर, चुरू, सीकर, झुन्झुनूं, नागौर, पाली, जोधपुर, बाड़मेर, जालौर में फैला हुआ है। इस प्रकार राज्य का लगभग दो–तिहाई भाग (लगभग 1,86,206 वर्ग किमी.) रेगिस्तानी क्षेत्र है जो कि राजस्थान का पश्चिमोत्तर इलाका है। राज्य के मध्य से अरावली पर्वतमाला गुजरती है जो दिल्ली के पास से आरम्भ होकर गुजरात राज्य तक जाती है। अरावली पर्वतमाला की सबसे ऊँची चोटी गुरुशिखर राजस्थान के सिरोही जिले के माउन्ट आबू में स्थित है जिसकी ऊँचाई 1772 मीटर है जबकि दूसरी ऊँची चोटी सेर, सिरोही (1597 मीटर ऊँचाई), तीसरी ऊँची चोटी जरगा (1431 मीटर ऊँचाई), चौथी अचलगढ़, सिरोही (1380 मीटर, ऊँचाई) है। इनके बाद क्रमशः आबू पर्वत (1295 मीटर), कुंभलगढ़–राजसमंद (1224 मीटर), जोलिया डूंगर–उदयपुर (1166 मीटर), घोनिया–सिरोही (1183 मीटर), रघुनाथगढ़–सीकर (1056 मीटर), सज्जनगढ़–उदयपुर (938 मीटर), तारागढ़–अजमेर (873 मीटर) प्रसिद्ध चोटियाँ है। पर्वतमाला के दो प्रमुख दर्रे–देसूरी दर्रा व हाथी दर्रा है। इन पर्वत श्रृंखलाओं से निकलने वाली मुख्य नदियाँ – बनास, लूनी, माही, बाणगंगा, कोठारी, खारी, जोजरी एवं बेड़च है। अजमेर, पाली, सिरोही, चित्तौड़गढ़, उदयपुर, डूंगरपुर व बाँसवाड़ा जिलों में पर्वतमाला विस्तारित है।

Scanned with CamScanner

डॉ. देवा राम

सह आचार्य-अर्थशास्त्र

डॉ. भीमराव अम्बेडकर राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, निम्बाहेड़ा, जिला - चित्तौड़गढ़ (राज.)

शिक्षा :

- एम. ए. अर्थशास्त्र (1998) एवम् पीएच.डी. (2002), अर्थशास्त्र विभाग, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय जोधपुर (राज.)
- NET एवम् JRF (जून 1998) - यू.जी.सी.

अध्यापन :

- कॉलेज शिक्षा सेवा राजस्थान के अन्तर्गत 20 वर्षों से अर्थशास्त्र विषय का अध्यापन।

कृतियाँ/प्रकाशन/शोध :

- 2 सन्दर्भ पुस्तकें प्रकाशित,
- 1 पाठ्यपुस्तक (सामान्य अर्थशास्त्र : व्यष्टिगत आर्थिक विश्लेषण) राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी जयपुर से प्रकाशित
- 15 से अधिक शोध पत्र व लेख प्रतिष्ठित शोध पत्रिकाओं, संपादित पुस्तकों में प्रकाशित।
- 2 शोध प्रोजेक्ट (यू.जी.सी. द्वारा प्रायोजित) कार्य पूर्ण
- 20 से अधिक राष्ट्रीय सेमिनार में सहभागिता

शोध निर्देशन:

- मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय से रिसर्च सुपरवाइजर के रूप में पंजीकृत एवम् 07 रिसर्च स्कोलर आवंटित

सदस्यता/सम्मान:

- भारतीय आर्थिक परिषद (IEA),
- राजस्थान आर्थिक परिषद (REA),
- भारतीय अर्थमितीय सोसायटी (TIES) सदस्यता एवम्
- राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर द्वारा लेखक सम्मान।

amazon Flipkart

ISBN 978-93-94940-13-0

9 789394 940130

चाणक्य प्रकाशन जयपुर

Scanned with CamScanner

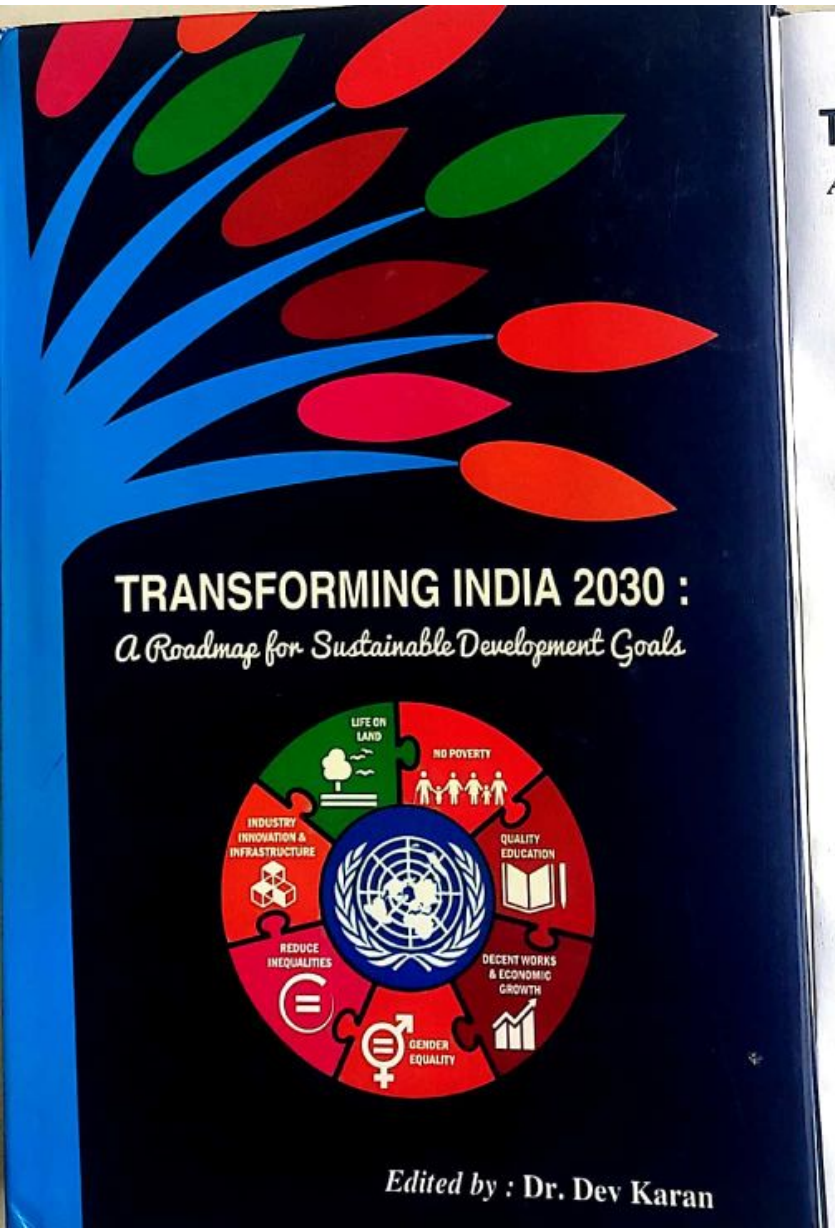

TRANSFORMING INDIA 2030 :

A Roadmap for Sustainable Development Goals

Edited by :

Dr. Dev Karan
Assistant Professor
Department of Economics,
Jai Narain Vyas University, Jodhpur (Rajasthan)

Publication :

USHA PUBLICATION HOUSE
JODHPUR

Scanned with CamScanner

INDEX

1. A Study on Achievement of Sustainable Development Goals from a Gender Equality Perespective - ***Pradeep Kumar Panda*** 1
2. NPAs in Banks Affecting the Development of India - ***Neha Paliwal*** 22
3. Higher Education in India & Skill Development : Catalysts of Employability in India - ***Khushboo Niyarta*** 37
4. India's Health System : Way Forward - ***Bala Devi*** 47
5. Demonetization of India Currency : An Elementary Drag towards Digital Economy - ***Megha Jain & Abhikrati Shukla*** 57
6. Assessing The Status of Interstate Financial Inclusion Process In India - ***Deepa Soni*** 67
7. Carbon Credit-Solution Step Towards Global Warming - ***Peeyush Bangur & Abhikrati Shukla*** 76
8. Gender Disparties in Labour Market : Duncan Dissimilarity Approach - ***Laxman Lal Salvi*** 89
9. Make in India : A Big Push to Manufacturing Sector - ***Parvez Ali*** 101
10. Growth with Digital Platform in Perspective of India and Rajasthan - ***Ashish Kumar*** 112
11. Achieving the Sustainable Development Goals 2030 with Special Reference to Agriculture from Indian Perspective - ***Aruna Kumari*** 119
12. Green Accounting : Concept and Importance - ***Mangu Ram*** 126
13. MGNREGA - A Prospect of Achieving Sustainable Development Goals through Poverty Reduction - ***Rekha*** 133
14. Stress Management Practicies For Employees : An Overview - ***Ashok Kumar*** 142
15. Climate Change And Sustainable Development - ***Vrinda Ojha*** 150
16. Access To Education : A Case Study of a Village - ***Deva Ram*** 158
17. Urbanization and Environment : Issues and Challenges - ***Ekta Khator*** 167
18. An Overview of Laws for Environmental Protection in Context of Sustainable Development - ***Kuchta Ram*** 175

Scanned with CamScanner

Access To Education: A Case Study of A Village

Dr. Deva Ram

Associate Professor, Dept. of Economics,
Dr. Bhimrao Ambedkar Govt. P G College,
NIMBAHERA (Dist.Chittaurgarh), Rajasthan

Introduction

Human capital is the most important factor in economic growth, so human resource development is the prime goal of the modern world. Education, health and nutrition are the basic means for human resource development. The role of education in raising the consciousness is widely acknowledged in the contemporary world. And also in this new era most of the occupations require particular type of skill, that can be gain through education. Besides, education not only helps in getting good job but also means to attain high social status. It gives platform to individuals to involve in development process through imparting of information, knowledge and skills. Thus, education is the backbone for overall development of every society or nation and even whole world. The role of education in facilitating social and economic progress is well accepted. So that UNDP has included Inclusive and Quality Education as one of the most important goals for overall sustainable development.

According to Human Development Report (UNDP, 1993) literacy is a person's first step in learning and knowledge building and as a result literacy indicators are essential for any measurement of human development. Correspondingly, the literacy is one of the most significant indicators of the human development. This is an important component, out of three components, of Human Development Index (HDI), which is single composite index of human development of every country and has been publishing by United Nations Development Programme (UNDP) since 1990 as Human Development Report (HDR). Thus, literacy and basic education build fundamental structure for development of the country while higher education is recognized as a critical factor in inclusive and faster growth. Since the independence, government has been made many efforts to raise the level of literacy and education through various schemes, provisions and programmes. Likewise, National Literacy Mission (NLM), Total Literacy Campaign (TLC), Sarva Shiksha Abhiyan (SSA), Operation Black-Board, National Policy Education (NPE), and now, Right of Children to Free & Compulsory Education (RTE) Act etc. Due to launching various schemes/programmes by

Scanned with CamScanner

DISCLAIMER

The authors are solely responsible for the contents of the papers compiled in this volume.. The publisher or editors do not take any responsibility for the same in any manner. Errors if any, are purely unintentional and readers are requested to communicate such errors to the editors or publisher to avoid discrepancies in futurs.

Year of Publication - 2019

ISBN - 978-81-921245-0-6

No part of this book may be reproduced or utilized in any form or by any means without prior permission from the Editors.

© Editors

Publisher:
NATURAL GROWTH BOOKS
Jodhpur (Rajasthan)

Published in India

Feb. 2019

Published by Natural Growth Books, Jodhpur. Desigend & Printed by Vijayant Vyas, Computer Craft, Johpur. Mobile 9314342165

ISBN 978-81-921245-0-6

Natural Growth Books
JODHPUR

Rs. 400/-

Scanned with CamScanner

डॉ. एम. आर. सिंगारिया

• **पदस्थापन :** सहआचार्य एवं विभागाध्यक्ष, अर्थशास्त्र विभाग, स.ध. राजकीय महाविद्यालय, ब्यावर (राजस्थान) • **आजीवन सदस्यता :** 1. Indian Economic Association (IEA), 2. The Indian Econometric Society (TIES), 3. Indian Association for the Study of Population (IASP), 4. Rajasthan Economic Association (REA) • **शोध-क्षेत्र :** आर्थिक विकास Economic Development, 2. Demographic Studies, 3. Econometric Analysis, 4. Macro Economics • **प्रकाशित पुस्तकें :** 1. Population Growth and Economic Development in Rajasthan–An Econometric Analysis • **सदस्य अन्तर्राष्ट्रिय सम्पादक मण्डल :** 1. Journal of Finance and Economics (JFE), 2. International Journal of Econometrics and Financial Manage-ment (IFEFM), 3. Growth (Asian online Journals.com) • **शोध आलेख :** चालीस से अधिक शोध पत्र राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित।

सम्पर्क :

76, 'मातृ-कृपा' सेठ सांवरिया कॉलोनी,
जालिया रोड, ब्यावर
Mobile : 9414496236
Mail ID : mr.singariya@gmail.com

डॉ. हरीश कुमार

• **पदस्थापन :** सहआचार्य, हिन्दी-विभाग, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जैतारण (पाली) राजस्थान • **शोध-क्षेत्र :** अज्ञात एवं अल्पज्ञात सन्तों की वाणी, पाण्डुलिपियों पर शोधपरक अध्ययन • **प्रकाशन :** 1. रामसनेही सम्प्रदाय : परम्परा एवं मूल्यांकन, 2. रामसनेही सन्त राघोदासजी : जीवन एवं दर्शन • **प्रकाशाधीन :** 1. सन्त नामदेव, 2. भारतीय साहित्य एवं संस्कृति के विविध आयाम (सम्पादन) • **शोध आलेख :** 30 से अधिक शोध-पत्र राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित • **शोधपरक अध्ययन हेतु सम्मानित :** 1. भारतीय दलित साहित्य अकादमी, दिल्ली, 2. अखिल भारतीय रामस्नेही सम्प्रदायाचार्य पीठ-रामधाम खेड़ापा, 3. अंतर्राष्ट्रीय श्रीरामस्नेही-सम्प्रदाय (शाहपुरा), 4. अखिल भारतीय राजभाषा हिन्दी सेवी सम्मान पुरस्कार

सम्पर्क :

42, 'रुक्मिणी मंगल', महावीर कॉलोनी,
जालिया रोड, ब्यावर-305901 (अजमेर)
Mobile : 8432279323
Mail ID : hkumar171974@gmail.com

ISBN : 978-81-949377-3-9
₹ 400.00

राष्ट्र निर्माण में डॉ. भीमराव अम्बेडकर का योगदान

डॉ. एम. आर. सिंगारिया
डॉ. हरीश कुमार

राष्ट्र निर्माण में डॉ. भीमराव अम्बेडकर का योगदान

*

डॉ. एम. आर. सिंगारिया
डॉ. हरीश कुमार

Scanned with CamScanner

प्रकाशक :
रॉयल पब्लिकेशन
प्रकाशक एवं वितरक
18, शक्ति कॉलोनी, गली नं. 2
लोको शेड रोड, रातानाडा,
जोधपुर-342 011 (राजस्थान)
Mobile : 094142-72591
E-mail : rproyalpublication@gmail.com

© सम्पादक

प्रथम संस्करण : 2021 **मूल्य : ₹ 500.00**

ISBN : 978-81-949377-3-9

मुद्रक : भारत प्रिण्टर्स (प्रेस), जोधपुर

लेज़र टाइपसेटिंग : रोहन कम्प्यूटर, जोधपुर

Rastra Nirmaan Mai Dr. Bhimrao Ambedkar Ka Yogdaan
Editor : Dr. M.R. Singariya
Co-Editor : Dr. Harish Kumar
Royal Publication, Jodhpur
First Edition : 2021 ● ₹ 500.00

सम्पादकीय

बाबा साहब डॉ. भीमराव अम्बेडकर का व्यक्तित्व बहुआयामी था। उनका सम्पूर्ण जीवन राष्ट्र और मानवता को समर्पित था। वे विपुल प्रतिभा के धनी, परिश्रमी अध्येता थे। सन् 1915 में उन्होंने कोलम्बिया विश्वविद्यालय से एम.ए. अर्थशास्त्र की डिग्री प्राप्त की। उन्होंने 1921 में 'लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स' से 'डॉक्टरेट' की डिग्री हासिल की तथा 1922 में इंग्लैण्ड के ही 'ग्रेज इन' से 'बैरिस्टर एट लॉज' डिग्री उत्तीर्ण की, 1923 में अर्थशास्त्र में 'डॉक्टर ऑफ साइंस' की डिग्री प्राप्त की। बाबा साहब को शिक्षा प्राप्त करने की असीम जिज्ञासा थी इसी के चलते वे जीवन भर अध्ययन करते रहे। उनको 'डॉक्टरेट' की तीसरी और चौथी उपाधि क्रमशः कोलम्बिया विश्वविद्यलय से एल.एल.बी. (1952) तथा डी.लिट्. की डिग्री (1953) में उस्मानिया विश्वविद्यालय द्वारा प्रदान की गई।

बाबा साहब की बहुमुखी जीवन-साधना एवं लेखन ने एक पूरे और विशाल युग को प्रभावित किया। वे अनेक भाषाओं का ज्ञान रखने वाले विद्वान थे। अंग्रेजी भाषा में उनको विशेष दक्षता हासिल थी, अतः उन्होंने अधिकांश लेखन इसी भाषा में किया। अगाध विद्वता में सहजता का मणिकांचन योग उन्हें असामान्य महामानव के रूप में प्रतिष्ठित करता है। उनके द्वारा लिखित पुस्तक 'रुपये की समस्या : इसका मूल्य एवं समाधान' में उन्होंने रुपये के मूल्य में गिरावट के कारण भारत की आर्थिक स्थिति पर पड़ने वाले प्रभाव की व्याख्या की। उनका मानना था कि औद्योगिकरण द्वारा भारतीय अर्थव्यवस्था को आगे बढ़ाया जा सकता है। रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया की स्थापना उनके द्वारा हिल्टन यंग कमीशन पर दिए गए विचार से हुई तथा भारत के वित्त आयोग के गठन में भी बाबा साहब ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

बाबा साहब का मानना था कि राजनैतिक राजसत्ता के बिना आर्थिक एवं सामाजिक राजसत्ता अधूरी है। उन्हें संविधान का मुख्य शिल्पी कहा जाता है। यह

Scanned with CamScanner

उनके कठिन परिश्रम एवं लगन का ही प्रतिफल था कि उन्होंने सभी वर्गों, सभी वर्णों, विभिन्न सम्प्रदायों एवं भौगोलिक परिस्थितियों में निवास करने वाले पुरुषों एवं महिलाओं के लिए एक समान विश्व का सबसे बड़ा लिखित संविधान तैयार किया। जिसमें नागरिकों को स्वतन्त्रता, समानता एवं सुरक्षा प्रदान की गई। इसमें धर्म की आजादी, छुआछूत और भेदभाव के सभी रूपों को समाप्त करना भी सम्मिलित है। बाबा साहब महिलाओं के लिए व्यापक आर्थिक और सामाजिक अधिकारों के प्रबल समर्थक थे।

बाबा साहब ने अपने जीवन काल में अनेक शोध-पत्रों, पुस्तकों का लेखन, समाचार पत्रों का सम्पादन किया। उनका लेखन एक विशिष्ट सामाजिक दृष्टिकोण तथा असामान्य विद्वता के लिए जाना जाता है। उनके राष्ट्र निर्माण की अवधारणा, उदारता, समानता तथा सामुदायिकता पर आधारित थी। उन्होंने सदैव मानव अधिकारों के संरक्षण की वकालत की। हम चाहते हैं कि एक नई सोच के साथ उनके राष्ट्र एवं सामाजिक अवदान पर विस्तृत एवं व्यापक रूप से चिन्तन-मनन हो। इस पुस्तक के कुल 25 अध्यायों में बाबा साहब को इसी रूप में समझने का प्रयास विद्वान लेखकों, शोधार्थियों द्वारा किया गया है।

बाबा साहब के व्यक्तित्व एवं चिन्तन को पुस्तक रूप में सम्पादित करने की प्रेरणा हमें डॉ. जी.एस. चौहान (संयुक्त सचिव, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली), प्रो. शक्ति कुमार (चैयरपर्सन–सी.ई.एस.पी., जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली), श्री जय नारायण शेर (आई.पी.एस.–डी.आई.जी. पुलिस अपराध शाखा, राजस्थान), प्रो. वी.एस. पंवार (सेवानिवृत्त प्राचार्य) एवं डॉ. अरुणा गुप्ता (प्राचार्य, सनातन धर्म राजकीय महाविद्यालय, ब्यावर) से मिलती रही। हम इनके द्वारा प्रतिपल सहयोग एवं प्रोत्साहन के लिए हृदय से आभार व्यक्त करते हैं। पुस्तक प्रकाशन में श्री सूर्यप्रकाश भार्गव (रॉयल पब्लिकेशन, जोधपुर) के सहयोग के लिए भी आभार।

अन्ततः जिस उद्देश्य को लेकर यह पुस्तक पाठकों के समक्ष प्रस्तुत की गई है, उसमें हम यत्किंचित भी सफल होते हैं तो अपने श्रम को सार्थक समझेंगे।

डॉ. एम. आर. सिंगारिया
डॉ. हरीश कुमार

अनुक्रमणिका

•	**सम्पादकीय**	9
1.	सामाजिक न्याय के सूत्रधार : डॉ. भीमराव अम्बेडकर –डॉ. प्रेमलता परसोया	9
2.	अर्थशास्त्र एवं आर्थिक विकास के क्षेत्र में डॉ. अंबेडकर का योगदान –डॉ. देवा राम	25
3.	हिन्दी साहित्य में दलित चेतना और डॉ. भीमराव अम्बेडकर –प्रतिमा खटुमरा	35
4.	जल संसाधन संवर्धन एवं प्रबन्धन में डॉ. भीमराव अम्बेडकर का योगदान –डॉ. श्रीमती रजनी वरुण	43
5.	बहुआयामी व्यक्तित्व : डॉ. भीमराव अम्बेडकर –डॉ. सीमा शर्मा	48
6.	समकालीन परिदृश्य में अंबेडकर के आर्थिक चिंतन की प्रासंगिकता –धीरज कुमार पारीक	53
7.	अम्बेडकर का सामाजिक दर्शन –डॉ. पूजा वरुण	61
8.	महिला सशक्तिकरण एवं बाबा साहेब अम्बेडकर का योगदान –श्रीमती संगीता पांचाल	68
9.	डॉ. बी.आर. अंबेडकर की महिला सशक्तिकरण में भूमिका –सुमन देवी शर्मा	75
10.	डॉ. भीमराव अम्बेडकर के सामाजिक न्याय सम्बन्धी विचार –डॉ. आशीष कुमार	88
11.	बाबा साहब डॉ. भीमराव अम्बेडकर : एक युग प्रवर्तक –डॉ. राकेश वर्मा	100

Scanned with CamScanner

अर्थशास्त्र एवं आर्थिक विकास के क्षेत्र में डॉ. अंबेडकर का योगदान

✍ डॉ. देवा राम

सह–आचार्य अर्थशास्त्र, डॉ. भीमराव अंबेडकर राजकीय महाविद्यालय, निम्बाहेड़ा, राजस्थान

परिचय

14 अप्रैल 1891 को 14वीं संतान के रूप में मध्य भारत के महू छावनी क्षेत्र में तत्कालीन ब्रिटिश ईस्ट इंडिया की सेना के सूबेदार रामजी सकपाल और भीमा बाई के घर एक महान शख्सियत ने जन्म लिया जिन्हें हम बाबासाहेब डॉ. भीमराव रामजी अंबेडकर के नाम से जानते हैं। बचपन से ही विलक्षण बुद्धि के धनी डॉ. अंबेडकर एक प्रसिद्ध भारतीय विधिवेत्ता, राजनेता, मानव शास्त्री, दार्शनिक, इतिहासविद और प्रभावशाली वक्ता के साथ ही साथ एक अच्छे अर्थशास्त्री भी थे। न केवल उन्होंने अपने आरंभिक काल में अर्थशास्त्र का अध्ययन–अध्यापन ही किया वरन् बाद के वर्षों में अपने आर्थिक विचारों और मतों को भारतीय आर्थिक विकास में भी अपनाया तथा संविधान निर्माण में भी इसकी झलक देखी जा सकती है। भारतीय मूल के नोबेल पुरस्कार से सम्मानित अर्थशास्त्री अमर्त्य सेन भी डॉ. अंबेडकर को अर्थशास्त्र के क्षेत्र में अपना पिता मानते हैं (अंबेडकर इज माय फादर इन इकोनॉमिक्स)। एस. अम्बिराजन कहते हैं कि "यह अर्थशास्त्र प्रोफेशन के लिए दुर्भाग्य की बात रही कि डॉ. अंबेडकर ने अर्थशास्त्र के प्रोफेशन को छोड़कर विधि और राजनीति को चुनने का निर्णय लिया" लेकिन मेरा मानना है कि डॉ. अंबेडकर ने भले ही अर्थशास्त्र में अपने केरियर को आगे बढ़ाने के बजाय विधि और राजनीति के क्षेत्र को अपनाया हो परन्तु उन्होंने अपने संपूर्ण जीवन में राष्ट्र के आर्थिक विकास और समाज के विकास में अपने आर्थिक अनुभवों को प्रायोगिक रूप प्रदान किया तथा विश्व में मानवता को स्थापित करने के लिए आर्थिक आधारों को स्तम्भ बनाया। प्रस्तुत आलेख अर्थशास्त्र के क्षेत्र में बाबासाहेब आंबेडकर के योगदान को समझने

Scanned with CamScanner

CERTIFICATE OF PUBLICATION

Archers & Elevators Publishing House

THIS CERTIFICATE IS PROUDLY PRESENTED TO

Dr. DEVA RAM

For publishing his/her paper in a Peer-Reviewed Edited Book

TITLE: INDIAN BANKING CRISIS IS IMPEDING ECONOMIC GROWTH

BOOK: **Emerging Trends in Banking & Finance** ISBN: 978-93-90996-49-0

7/08/2021

DATE

S.Mahalingam
Director - AEPH

Scanned with CamScanner

EMERGING TRENDS IN BANKING & FINANCE

Sruthi.S.
Dr.Harbans Lal Sharma
Dr.P.Rengarajan
Dr.S.Durga
Dr.Harshada Aurangabadkar

Scanned with CamScanner

Emerging Trends in Banking & Finance

Sruthi.S
Dr.Harbans Lal Sharma
Dr.P.Rengarajan
Dr.S.Durga
Dr.Harshada Aurangabadkar

Archers & Elevators Publishing House
Bangalore – 560 090 India.

Scanned with CamScanner

ARCHERS & ELEVATORS PUBLISHING HOUSE

No.54, MM Layout,

Hesaragatta Main Road,

Bangalore -560090

Mob: + 91 9164362263

E-mail: archerselevators@gmail.com

Website: www.aeph.in

Emerging Trends in Banking & Finance

© Archers and Elevators Publishing House

First Edition 2021

ISBN: 978-93-90996-49-0

Price: Rs.850/-

All rights reserved. This book or parts therefore, may not be reproduced in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopying, recording or an information storage and retrieved system now known or to be invented, without written permission from copyright owners.

PRINTED IN INDIA
A & E printers, Bangalore-90.

Scanned with CamScanner

CONTENTS

S.NO	TITLE OF THE PAPER	PAGE NO
1	**ROLE OF INDIAN BANKING SECTOR IN PROMOTING FINANCIAL INTERMEDIATION** ARCHANA BANSODE, Dr. VINOD R.K, PADMBHUSHAN Dr VIJAY BHATKAR	1
2	**ARIMA MODELING USING E-VIEWS SOFTWARE** DEBASIS MOHANTY, SUPRITI KHANDELWAL, Dr YASIN SHEIKH	8
3	**CORPORATE SOCIAL RESPONSIBILITY: A CONCEPTUAL FRAMEWORK** Dr HIMANSHU MATHUR	17
4	**IMPACT OF COVID-19 ON BANCASSURANCE IN INDIA** Dr NAZIA SULTANA, K.SRINISHILA	22
5	**EMERGING TRENDS IN BANKING INDUSTRY -AN INSIGHT FROM ITS OPPORTUNITIES & CHALLENGES** Dr. HARSHALI P. AURANGABADKAR Prof.(Dr.) RAKESH S. PATIL , Prof. PRABODHAN PATIL	29
6	**THE STUDY OF MARKET BASED MIBOR RATE** Dr. KOEL GAUTAM ROY CHOUDHURY	37
7	**A STUDY TO ASSESS THE AWARENESS AND KNOWLEDGE QUOTIENT OF THE INVESTORS WITH REGARDS TO COMMODITY MARKET OF INDIA** Dr. SATINDER KAUR	48
8	**SUGGESTIONS FOR IMPROVING DISCLOSURE PRACTICES OF BANKS** Dr. SUNITA GUPTA	59
9	**CORPORATE GOVERNANCE DISCLOSURES IN ANNUAL REPORTS OF BANKS** Dr. SUNITA GUPTA	65
10	**INVESTORS TRADING BEHAVIOR TOWARDS COMMODITY MARKET** DR P VENKATESH, MR.K.MURUGAN, DR.M.KRISHNAMOORTHI, DR.C.H SENTHILNATHAN	73
11	**AGROCHEMICAL STOCK FORECASTING: AN EMPIRICAL APPROACH ON THE BASIS OF PRE AND POST BUDGET ANNOUNCEMENT FOR 2020-21** JANANI RATNAGARAJAN, SIVAGAAMI, SUMATHI, G.N. SHARON SOPHIA	79
12	**A STUDY ON GROWTH PATTERN OF MOBILE BANKING IN INDIA** M. SURESH	91
13	**BEHAVIORAL FINANCE** MOUSUMI MUKHERJEE	96
14	**EMERGING TRENDS IN BANKING SECTOR** MS. MANJOT KAUR, MS. HIMANSHI	99
15	**GROWTH OF DERIVATIVES MARKET: A STUDY IN INDIA** PALLAVI SARMA	106
16	**A JOURNEY OF BANKING REGIME OF INDIAN GOVERNMENT: FROM TRADITIONAL TO ELECTRONIC BANKING** PROF. PRABODHAN U. PATIL , PROF (DR.) RAKESH S. PATIL, DR.TUSHAR SAVALE	125
17	**ROLE OF FINANCIAL INSTITUTIONS IN REALISATION OF SUSTAINABLE DEVELOPMENT GOALS** RAMSHANKAR VARMA	132
18	**INDIAN BANKING CRISIS IS IMPEDING ECONOMIC GROWTH** RAVI KUMAR ALARIA, Dr. DEVA RAM	142
19	**THE IMPACT OF BANK INNOVATION ON TOTAL INCOME OF COMMERCIAL BANKS IN CAMBODIA** CHHKANG NORTH	152

Scanned with CamScanner

INDIAN BANKING CRISIS IS IMPEDING ECONOMIC GROWTH

Ravi Kumar Alaria
Research Scholar,
Economics Department, MLSU, Udaipur

Dr. Deva Ram
Associate Professor,
Dr Bhimrao Ambedkar Government College, Nimbahera

ABSTRACT

Banking crisis or NPAs crisis in Indian banks was one of the main reasons for economic slowdown. There are two lending sectors of banks in India i.e., Priority and Non-Priority, where priority sector includes small and micro enterprises, agriculture, education, social infrastructure etc. it's difficult to get credit in this sector. On the other hand, non-priority sector attracts all the financial institutions every time; they are always ready to lend credit. This paper attempts to put forward a concise and comprehensive analysis of priority and non-priority sectors, non-performing assets (NPAs) to total non-performing assets and examine the impact of these two sectors NPAs on total NPAs after global financial crisis 2008. Also try to analyse the impact of recapitalisation on total number of NPAs before COVID-19. The aim is to check whether infusion of fresh capital in public sector banks by government can resolve the problem of NPAs which ultimately helps in improving numbers of GDP.

Key words: Public sector banks (PSB), Priority sector, Non-Priority sector and Non-Performing assets (NPAs).

INRTODUCTION

In any economy, banking system plays very important role for countries growth and development. NPA mean if a borrower doesn't repay his/her debts at their respective due dates because of inability or unwillingness, such debt shows an incorrect picture in the yearend financial statements of banks. Functioning of banking system is direct and positively related to the economy's performance therefore NPAs are a serious threat to banks. A contrasting notion as we all knows is NPAs are also life time a friend of bank till the loans and credit system continues.

Public sector banks are the type of banks where a majority stake is held by government. In India, government has control over policies and owns majority share (58 percent) in public sector banks but still NPAs are rising over the period of time in this sector.

Chart: - 1, NPAs of public and private sector banks

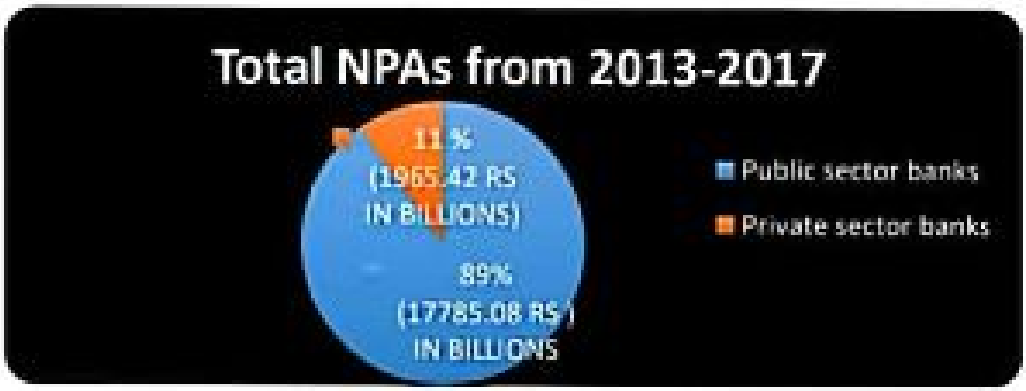

Scanned with CamScanner

DATA SOURCE: RBI; STATISTICAL TABLES

Above chart depicts the data of last 5 years where the total NPAs of private sector banks are nearly about 11 percent of total NPAs, whereas NPAs of public sector banks are about 89 percent of total NPAs. This reflects the ineffectiveness of public sector banks in dealing with NPAs. As we can see NPAs of public sector banks are increasing with faster rate. The measures used by government were ineffective in decreasing the level of NPAs.

In India, NPAs are a solemn risk to both banking sector and economy. Higher NPAs acts as a catalyst for economic growth slowdown, thereby reducing the loan lending power of banks. To overcome this, government recapitalise in public sector banks.

Public sector bank recapitalisation means injection of fresh capital majorly by government and rest through market. This policy was started with an aim to financially strengthen the public sector banks (since government is the majority holder of PSBs shares) and resolution to the problems of bad debts as the rising NPAs which led to erosion of capital. To meet higher capital advance requirements and to accelerate the pace of economic activity has emerged as the highest priority.

But this is probably not a correct remedy for the solution of NPAs.

Indian economy faced major NPAs in priority sector before 2012 but recent trends shows majority of gross NPAs made in non-priority sector.

LITERATURE REVIEW

Mathur, K. B. L. (2002) investigations showed that there is the burden of recapitalisation during the time period 1990-2004 doesn't come out to be as huge as is made out. According to him the real burden on budget was lack of consideration of some other related flows like dividend amounts.

Uppal, R. K. (2009) founded that lending to priority sector creates many problems to Indian banks like transition cost, high NPAs and low profitability. These issues are very serious and it required finding out the solutions, otherwise banking growth of India will cessation.

Rajan, R., & Dhal, S. C. (2003) study shows the recovery rate to total number of NPAs. And they founded that writing off defective loans and bad loans are high in priority sector lending.

Chaudhary, K., & Sharma, M. (2011) studied the relationship between public sector banks and private sector banks NPAs. They concluded that NPAs of public sector banks are higher than private because priority sector lending in public sector banks is higher than private sector.

Selvarajan, B., & Vadivalagan, G. (2013) study shows in dept analysis about the participation of lending activities in public sector banks in priority sector. It showed lending in priority sector by Indian bank grows faster than public sector banks. Performance of Indian banks was better in managing the problem of NPAs than other public sector banks

OBJECTIVES

1. To study and analyse the pattern of NPAs in priority and non-priority sector.
2. To study the trends in recovery and write off rate
3. Measures used by government

Scanned with CamScanner